International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Volume 01, No. 03, July - September, 2019, pp.229-230

f'k{kk esa u;s fopkjksa ls gh ifjorZu

गरिमा मीना*
डॉ. रीटा शर्मा**

प्रस्तावना

परिवर्तन सृष्टि का शाश्वत नियम है। परिवर्तन से ही सृष्टि में नवीनता आती है। पुराने पत्तों के स्थान पर नवीन पत्ते आ रहे हैं। पुराने फूलों के स्थान पर नवीन फूल आ रहे हैं। प्रकृति की इस नित नवीनता से हम सदा ही आकर्षित रहते हैं। प्रकृति की इस नवीनता के पीछे परिवर्तन का हाथ रहता है।

समाज में भी नवीन परिवर्तन हो रहा है। पुराने विचारों के स्थान पर नवीन विचार आ रहे हैं। पुरातन मान्यताओं का स्थान नवीन मान्यताऐं ले रही है। समाज में परिवर्तन नवीन–नवीन विचारों का आना उसे नया जीवन प्रदान करता है। उसे नवीन स्फूर्ति देता है। ऐसा समाज शिक्षा के द्वारा ही सदा आगे बढ़ता है। इसी तत्व के महत्त्व को समझते हुए **कोठारी आयोग** ने अपनी व्याख्या के प्रारम्भ में लिखा है।

"भारत के भाग्य का निर्माण इस समय कक्षाओं में हो रहा है।"

चूंकि किसी देश का बालक वहाँ की भावी शक्ति होता है। अतः कक्षा में भारत के भाग्य का निर्माण शिक्षक के द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों के अनुरूप निर्मित पाठ्यक्रम के शिक्षण द्वारा किया जाता है।

यदि उपर्युक्त कथन पर ध्यान दिया जाये तो स्पष्ट है कि कल के भारत का निर्माण आज के शिक्षक ही है। शिक्षण तकनीकी में तीव्र गति से हुए विकास के फलस्वरूप शिक्षण हेतु शिक्षाविदों ने विभिन्न नवीनतम पद्धतियों का आविष्कार किया ताकि छात्रों में नवीन चुनौतियों का सामना करने के लिए मौलिक चिंतन का विकास किया जा सके। जब शिक्षण कार्य निश्चित एवं व्यापक स्वरूप के अनुसार आयोजित किया जाता है तो इस निश्चितता को विधि की संज्ञा दी जाती है। वास्तव में विधि शिक्षण कार्य को वांछित दिशा तथा आवश्यक गति प्रदान करती है। उत्तम विधियों के संबंध में चिंतन पिछले अनेक वर्षों से अनवरत चल रहा है। वास्तव में शिक्षण विधि शिक्षार्थी के जीवन में संख्यात्मक तथा गुणात्मक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण परिवर्तन करने में समर्थ होती है अतः विधि का चुनाव करते समय यह तथ्य सदा शिक्षक के ध्यान में रहना चाहिए कि इसके द्वारा शिक्षक के मूल्यांकन उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हो सकेगी। स्पष्ट है कि जिस विधि द्वारा सूचना प्रदान करने का उद्देश्य पूरा नहीं होता हो उसका प्रगतिशील शिक्षण में विशेष महत्त्व नहीं है। इस दृष्टि से पाठ्यपुस्तक विधि, भाषण विधि आदि विशेष उपयोगी नहीं है, क्योंकि शिक्षण विधि तभी उपयुक्त मानी जाती है जबकि उससे शिक्षण के बाद समस्त शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके।

आधुनिक युग में शिक्षा के प्रति छात्रों में बढ़ते हुए अलगाव को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षण में ऐसी प्रविधियों का प्रयोग किया जाए जो छात्रों में अन्तदृष्टि आलोचनात्मक दृष्टिकोण, सौन्दर्यानुभूति, विश्लेषणात्मक विषयों का सहसंबंध स्थापित करने की योग्यता, विषयों की सामाजिक व व्यवहारिक उपयोगिता को पहचानने की योग्यता का विकास कर सके।

* शोधार्थी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** प्राचार्या, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, जामडोली, जयपुर, राजस्थान।

शिक्षक से वर्तमान में शिक्षा जगत में हो रहे परिवर्तनों के अनुसार स्वयं को ढालते हुए विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण प्रदान करने की अपेक्षा की जाती है। एक शिक्षक के मनोबल संतुष्टि श्रेष्ठ शिक्षण पद्धति, नवीन प्रयोगों उद्देश्यपूर्ण शिक्षण आदि के आधार पर ही श्रेष्ठ व स्वस्थ भावी नागरिकों का निर्माण संभव है।

नई सदी में मानववादी शिक्षक के प्रसार द्वारा नए समाज का निर्माण शिक्षक का प्रथम उद्देश्य होना चाहिए, क्योंकि शिक्षा तो इंसान के जीवन में आरम्भ से लेकर अंत तक चलने वाली अविरल धारा है। शिक्षा ही राष्ट्र के निर्माण में देश की संस्कृति व राष्ट्र के विकास हेतु प्रेरणादायिनी है। शिक्षण की क्रिया एक या अनेक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए की जाती है। विषय के अनुसार शिक्षण के लिए अनेक पद्धति में कुछ ना कुछ विशेषताऐं होती है। शिक्षण विषय की उपयोगिता तथा छात्रों की रूचि और योग्यता के अनुसार किसी भी पद्धति को अपनाया जा सकता है।

आज सामाजिक परिवर्तनों में जो तेजी आई है शिक्षा में इसकी झलक कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होती। इस दृष्टि से शिक्षा बहुत पीछे रह गई है। यदि शिक्षा को समाज के साथ–साथ चलना है तो उसमें नवीन विचार लाने होगें। नयी–नयी विधियाँ अपनानी होगी। नए–नए कार्यक्रमों को स्थान देना होगा। विश्व में तकनीकी दृष्टि से जो प्रगति हो रही है उसको ध्यान में रखकर शिक्षाविदों और मनोवैज्ञानिकों के द्वारा जिन नवीन साधनों के द्वारा शिक्षा में सुधार लाने का प्रयास किया जा रहा है उन्हें शैक्षिक नवीन विधि कहा जाता है।

शिक्षण विधियाँ शिक्षक को यह बताती है कि वह अपने छात्रों को किस प्रकार से शिक्षा प्रदान करें। इस संदर्भ में **डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ठ** का कथन है कि–

"जिस प्रकार सत्य मार्ग के अभाव में एक व्यक्ति निर्दिष्ट स्थान पर नहीं पहुँच सकता उसी प्रकार उचित विधि के अभाव में छात्र को सही ज्ञान नहीं दिया जा सकता।"

इस प्रकार परम्परागत विधि के स्थान पर नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग कर शिक्षक बदलते हुए युग के साथ भावी नागरिकों को कदम से कदम मिलाकर चलना सीखा सकेंगे और उन्हें जीवन की वास्तविकता का ज्ञान करा सकेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- French, D. (1996). How to Cite Legal Authorities. London: Blackstone.
- Scarfe, G. (1982). Gerald Scarfe. London: Thames and Hudson (reproduced with permission).
- Walker, J.R. and Taylor, T. (1998). The Columbia guide to online style. New York: Columbia University Press.

❖◆❖